टिप्पणी

242hi06

6

सामवेद के संदर्भ में वेदों का संक्षिप्त अध्ययन

वैदिक युग भारतीय संस्कृति के इतिहास का वह प्राचीनतम युग है, जो भारत की प्राचीन संस्कृति के रूप में उपलब्ध है। विद्वानों के अनुसार वैदिक काल प्रायः ईसा पूर्व 5000 वर्ष के लगभग माना गया है। वेद कुल चार हैं- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद। चारों वेदों में से सामवेद को भारतीय संगीत का मूल माना जाता है।

उस काल में संगीत धार्मिक प्रयोजनों में उपासना एवं लौकिक समारोहों में मनोरंजन, दोनों का ही माध्यम था। स्वरों का विकास वैदिक युग में ही आरम्भ हो चुका था। प्रारम्भ में तीन वैदिक स्वरों का प्रयोग होता था- उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित। बाद में इन्हीं से सात वैदिक स्वरों का विकास हुआ, जिनका स्थान अंततः लौकिक अथवा गान्धर्व स्वरों ने ले लिया। वैदिक काल में विभिन्न प्रकार के वाद्यों का भी प्रयोग होता था। तंत्री वाद्यों में विभिन्न प्रकार की वीणा प्रचलित थीं। चर्म वाद्यों में दुन्दुभि, फूंक से बजने वाले वाद्यों मे तुणव तथा धातु निर्मित वाद्यों में आघाटि जैसे वाद्य भी उस समय प्रचलित थे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात आप–

- वैदिक काल में प्रचलित गान-प्रणाली का वर्णन कर सकेंगे;
- यज्ञों में गायन-वादन करने की विधि को प्रस्तुत कर सकेंगे;
- वैदिक संगीत के मूलाधार उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित आदि स्वरों से उद्भूत सामवैदिक सप्त स्वरों के विकास को रेखांकित कर सकेंगे;
- तत्कालीन प्रचलित चतुर्विध **'तत, सुषिर, अवनद्ध** तथा **घन** वाद्यों के संबंध के बारे में वर्णन कर सकेंगे।

टिप्पणी

6.1 वैदिक काल में प्रचलित संगीत की प्रणाली

वैदिक काल में संगीत का प्रयोग धार्मिक प्रयोजनों के लिये तथा लौकिक समारोहों के अवसर पर प्रचुर मात्रा में किया जाता था। यज्ञों के अवसर पर प्रयोग किये जाने वाला संगीत (वैदिक) कठोर नियमों से आबद्ध था जबकि लौकिक समारोहों के अवसर पर आयोजित संगीत (लौकिक) में लोकरंजन का तत्त्व अधिक होता था। वैदिक ऋचाओं को जीवन्त, शक्ति सम्पन्न तथा दिव्यात्मक माना जाने के कारण इनका गान लौकिक व पारलौकिक कामनाओं की पूर्ति के लिये पृथक-पृथक विधि-विधानों से विविध प्रकार के यज्ञों के लिये किया जाता था। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुये वेदगान करने के लिये ऐसे ब्राह्मणों को योग्याधिकारी माना जाता था जो स्वाभाविक मधुर कंठ वाले उत्तम गायक, उत्तम वादक तथा उत्कृष्ट प्रबन्धकार हों, वेदों के ज्ञान में परिपक्व हों तथा वैदिक क्रियाओं में भी कार्यकुशल व निपुण हों। इन सब विशेषताओं के अतिरिक्त उनको मौखिक रूप से वेद ज्ञान की शिक्षा भी ग्रहण करना अनिवार्य था, अतः इसी उद्देश्य से यक्षों व धार्मिक प्रयोजनों के लिये ब्राह्मणों को संगीत की विशेष शिक्षा दी जाती थी। यह शिक्षा पिता से पुत्र को, गुरू से शिष्य को अथवा गुरूकुल में विद्यार्थियों को सामूहिक रूप से दी जाती थी। वैदिक सिद्धान्तों का अध्ययन करने के लिये कुछ आश्रमों एवं सामपरिषदों की भी स्थापना की जाती थी जिनमें संगीत के स्वर-वैशिष्ट्य तथा उच्चारण-वैशिष्ट्य का विशेष रूप से ज्ञान दिया जाता था। यह नियमबद्ध वैदिक संगीत ही वैदिक काल के शास्त्रीय संगीत का रूप माना जा सकता है।

लौकिक संगीत के परिप्रेक्ष्य में वीर पुरूषों की स्तुतिपरक लोकगाथाओं तथा राजाओं का प्रशंसायुक्त गान के रूप में 'गाथा', 'नाराशंसी' तथा 'रैभ्य' आदि नामक गीत प्रकारों का प्रचार था जिनका प्रयोग धार्मिक तथा लौकिक दोनों प्रकार के समारोहों के अवसर पर किया जाता था। 'गाथा' गीत का गान वीणा वाद्य के साथ किए जाने के कारण गायकों को 'गाथागायक', 'वीणागाथिन' अथवा 'वीणागणगिन्' कहा जाता था।

इस काल में नृत्य की प्रस्तुति खुले वातावरण में एकत्रित जनता के सम्मुख होती थी जिसमें नर तथा नारी दोनों ही भाग लेते थे। **'वाजसनेयी संहिता'** ग्रन्थ के अनुसार इस काल में **रज्जु, अरूण, प्रकृति, पुष्प** तथा **बसन्तादि** समूह नृत्य भी प्रचलित थे। इस प्रकार वैदिक काल में धार्मिक प्रयोजनों के लिये वेदों में निर्दिष्ट नियमों के अनुरूप शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त लौकिक समारोहों पर जनरुचि के आधार पर भी संगीत का प्रयोग दृष्टिगोचर होता है।

पाठगत प्रश्न 6.1

1. वैदिक काल में संगीत का प्रयोग किन अवसरों पर किया जाता था?
2. किस प्रकार के ब्राह्मणों को वेदगान का योग्य अधिकारी माना जाता था?
3. वैदिक काल में संगीत-प्रशिक्षण के लिये किन माध्यमों का प्रयोग किया गया?

टिप्पणी

4. लौकिकसंगीत में प्रयुक्त गीत-प्रकारों का उल्लेख कीजिये।
5. वीणावाद्य के साथ गान करने वाले गायकों को क्या कहते थे?
6. 'वाजसनेयी संहिता' ग्रन्थ में दिये गये समूह नृत्यों के नाम बताइए।

6.2 संगीत का मूल – सामवेद

वैदिक काल में चारों वेदों में संगीत का प्रतिनिधित्व सामवेद करता है इसीलिये सामवेद को भारतीय संगीत का मूल कहा गया है तथा इस वेद को चार वेदों में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। जैसा कि गीता में श्रीकृष्ण ने कहा है – 'वेदानां सामवेदोऽस्मि'। साम का गान ऋग्वेद की ऋचाओं के आश्रय से किया गया है अर्थात वैदिक मन्त्र जब स्वर सहित गाये जाते हैं तब उन्हें साम कहा जाता है। छान्दोग्य उपनिषद ग्रन्थ के अनुसार 'साम' की व्युत्पत्ति में कहा गया है- 'सा' + 'अम:' = साम 'सा' का अर्थ है 'ऋचा' तथा 'अम:' का अर्थ है 'आलाप' अर्थात 'आलाप से युक्त ऋचाओं का गान'। वेदमन्त्रों का स्वर तथा लययुक्त गायन करना ही सामगान कहलाता है।

सामवेद के दो भाग हैं – आर्चिक संहिता तथा गान संहिता। आर्चिक संहिता के पुन: दो भाग माने गये हैं- पूर्वार्चिक तथा उत्तरार्चिक। पूर्वार्चिक भाग में एकल गान के रूप में केवल एक ऋचा के ऊपर सामगान किया जाता था जबकि उत्तरार्चिक भाग में तीन-तीन ऋचात्मक सूक्तों के ऊपर गान किया जाता था। इसमें मुख्य गायक के साथ सहगायक भी होते थे। इस प्रकार पूर्वार्चिक तथा उत्तरार्चिक में मन्त्र (ऋचा) की प्रधानता रहती थी। परन्तु कालान्तर में जैसे-जैसे यज्ञानुष्ठानों में वृद्धि होने लगी वैसे-वैसे गान की प्रधानता की भावना भी बढ़ने लगी और सामवेद की दूसरी संहिता अर्थात **'गान संहिता'** की रचना हुई जो यद्यपि आर्चिक संहिता पर ही आधारित थी तथापि इसमें गेय तत्त्व की प्रधानता रहती थी। **'गान संहिता'** चार भागों में विभक्त है- **ग्रामगेयगान, अरण्यगेयगान, ऊहगान** तथा **उह्यगान।** ग्रामगेयगान के अन्तर्गत वेद की जटिल भाषा के स्थान पर छन्दोबद्ध सरल संस्कृत भाषा का प्रयोग किया जाता था। अरण्यगेयगान को निर्जन वन प्रदेश में गाया जाता था। ऊहगान तथा ऊह्यगान दोनों रहस्यगान माने गये जिन्हें उपनिषदों के रहस्य को समझने वाले साधक ही गाते थे। इस प्रकार आर्चिक ग्रन्थ साम के साहित्य मात्र का संकेत करते हैं तथा गानग्रन्थ साम के स्वरमय-स्वरूप के द्योतक हैं। यज्ञों में सामगान के लिये पांच अथवा सात भक्तियों का निर्देश दिया गया है, जो इस प्रकार है- **(1) प्रस्ताव (2) उद्गीथ, (3) प्रतिहार, (4) उपद्रव, (5) निधन**। इसके अतिरिक्त कुछ सामों में 'हिंकार' तथा 'प्रणव' नामक भक्तियों का प्रयोग भी किया जाता था। इन भक्तियों का गायन नियमानुसार करने वाले ऋत्विजों को प्रस्तोता, उद्गाता तथा प्रतिहर्ता नाम से सम्बोधित किया जाता था।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 6.2

1. 'साम' से क्या तात्पर्य है?
2. पूर्वार्चिक तथा उत्तरार्चिक में क्या अन्तर माना गया है?
3. 'गान संहिता' किन विभागों में विभक्त की गई है?
4. सामगान की पांचभक्तियों के नाम बताइये।
5. भक्तियों के नियमानुसार गायन करने वाले ऋत्विजों के नाम बताइए।
6. साम की व्युत्पति क्या है?

6.3 सामगान में प्रयुक्त स्वर

प्रारम्भ में सामगान करने के लिये केवल तीन स्वरों का प्रयोग किया जाता था जिन के नाम हैं। **उदात्त, अनुदात्त** तथा **स्वरित**। उदात्त अर्थात ऊँचा, अनुदात्त अर्थात् नीचा तथा स्वरित जिसमें स्वर के उच्चत्व व नीचत्व का समन्वय हो जाता है अर्थात मध्य का स्वर। इन्हीं तीन स्वरों का निर्देश करने के लिये मंत्रों के विविध अक्षरों के ऊपर उदात्त के लिये '1' संख्या, स्वरित के लिये '2' संख्या तथा अनुदात्त के लिये '3' संख्या का प्रयोग किया गया। उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित स्वरों का प्रयोग करते हुये सामगान का त्रिविध स्वरूप निर्मित हुआ– आर्चिक गान, गायिक गान तथा सामिक गान। जब एक ही स्वर का प्रयोग किया जाता था तब आर्चिक गान, दो स्वरों का प्रयोग करने पर गाथिक गान तथा तीन स्वरों का प्रयोग करने पर सामिक गान कहलाया। 'तैत्तरीय प्रातिशाख्य' ग्रन्थ के अनुसार शनैः शनैः इन्हीं तीन स्वरों से सामवैदिक सात स्वरों का विकास हुआ जिनके नाम हैं – **क्रृष्ट, प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, मन्द्र** तथा **अतिस्वार्य** जिन की तुलना क्रमशः लौकिक स्वरों के म, ग, रे, स, ध, नि, प, से की जा सकती है। निम्न तालिका से इनका सम्बन्ध स्पष्ट होता है:

वैदिक स्वरों का लौकिक स्वरों

सामवैदिक स्वर		लौकिक स्वर
क्रुष्ट	–	म
प्रथम	–	ग
द्वितीय	–	रे
तृतीय	–	सा

टिप्पणी

चतुर्थ	–	ध
मन्द्र	–	नि
अतिस्वार्य	–	प

पाठगत प्रश्न 6.3

1. उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित से क्या तात्पर्य है?
2. वैदिक वाङ्मय में एक, दो तथा तीन स्वरों से युक्त गायन के लिये किन संज्ञाओं का प्रयोग किया गया।
3. वैदिक संगीत में प्रयुक्त सप्त स्वरों के नाम लिखिये।

6.4 वैदिक काल के वाद्य

वैदिक काल में चार प्रकार के वाद्यों का उल्लेख मिलता है- (1) तन्त्री वाद्य (2) फूंक से बजने वाले वाद्य (3) चमड़े से मढ़े हुये वाद्य (4) धातु निर्मित वाद्य। इन चार प्रकार के वाद्यों को पश्चात्वर्ती समय में क्रमशः तत वाद्य, सुषिर वाद्य, अवनद्ध वाद्य तथा घन वाद्य के नाम से जाना गया।

वैदिक कालीन तन्त्री वाद्यों में वीणा का प्रमुख स्थान था। वीणा के अनेक प्रकार थे, यथा-बाणवीणा, कर्करि वीणा, काण्ड वीणा, अपघाटलिका, गोधा वीणा आदि। बाण वीणा को 'महावीणा' की संज्ञा भी दी गई है। इस वीणा में सौ तार लगे होते थे। महाव्रत यज्ञ के अवसर पर इस वीणा का वादन लकड़ी की शलाका (डण्डी) द्वारा किया जाता था। फूंक से बजने वाले वाद्यों के अन्तर्गत वंशी वाद्य के लिये बहुधा 'तूणव' संज्ञा प्रयुक्त हुई है। 'नाड़ी' भी इसी वंशी वाद्य का पर्याय था। चमड़े से मढ़े अवनद्ध वाद्यों के अन्तर्गत दुन्दुभि तथा भूमि-दुन्दुभि का विशेष महत्व था। दुन्दुभि वह ढोल प्रकार है जिसे काष्ठ पर चर्म को मढ़कर बनाते थे तथा इसका वादन दण्ड से किया जाता था जिसको 'आहनन' कहते थे। भूमि दुन्दुभि को भूमि में गढ़ा खोदकर उसके ऊपर चर्म मढ़ कर बनाया जाता था। इसका वादन बैल की पूँछ द्वारा ही होता था। 'पणव', 'पिंगा', 'गोधा', 'पटह' तथा 'गर्गर' आदि ये सभी वाद्य इसी श्रेणी के थे। एक वर्ग था जिन्हें गड़क नाम से जाना जाता था। धातु से बने वाद्यों के अंतर्गत 'आघाटि' का उल्लेख मिलता है जिसे कुछ मतानुसार अपघाटालिक अथवा काण्डवीणा भी माना गया है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 6.4

1. वैदिक काल में कितने प्रकार के वाद्य उपलब्ध थे? नाम बताइये।
2. 'महावीणा' से क्या तात्पर्य है?
3. 'भूमिदुन्दुभि' का वर्णन कीजिये।

आपने क्या सीखा

वैदिक काल में संगीत के लौकिक तथा शास्त्रीय दोनों ही रूपों का उल्लेख प्राप्त होता है। इस काल में संगीत को समाज में आदर की दृष्टि से देखा जाता था। वैदिक कालीन भारतीय संस्कृति में चार वेद माने गये – ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद। ऋग्वेद के मन्त्रों को जब स्वर सहित गाया जाता था तब उन्हें साम की संज्ञा प्राप्त होती थी। साम के दो भाग 'आर्चिक संहिता' तथा 'गान संहिता' के रूप में जाने गये। साम में प्रयुक्त प्रारम्भिक स्वर 'उदात्त' 'अनुदात्त' तथा 'स्वरित' थे। इन्हीं स्वरों से आगे चलकर सप्त स्वरों का विकास हुआ जिन्हें वैदिक स्वर कहा गया। शनैःशनैः इन सात स्वरों का स्थान लौकिक या गान्धर्व स्वरों ने ले लिया। वैदिक काल में चतुर्विध वाद्यों के रूप में वाद्यों का विकास हो चुका था। इनमें वीणा, दुन्दुभि आदि कुछ ऐसे प्रमुख वाद्य थे जिनका प्रयोग यज्ञों के अवसर पर सामगान के साथ विशेष रूप से किया जाता था। इससे स्पष्ट होता है कि वैदिक काल संगीत कला के विकास की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध एवं उत्कृष्ट था जिसने आगे चलकर भारतीय संगीत की सांस्कृतिक धारा को परिपक्व किया।

पाठांत प्रश्न

1. वैदिक काल में संगीत की प्रणाली का संक्षिप्त वर्णन कीजिये।
2. वैदिक काल में संगीत प्रशिक्षण का क्या स्वरूप था?
3. 'साम' शब्द की व्याख्या करते हुये सामवेद के विभिन्न विभागों का उल्लेख कीजिये।
4. सामगान के प्रारम्भिक तीन स्वरों का विस्तृत वर्णन कीजिये।
5. वैदिक काल में सप्त स्वरों के विकास का वर्णन कीजिये।

टिप्पणी

6. वैदिक कालीन चतुर्विध वाद्यों का परिचय दीजिये।
7. वैदिक काल में प्रचलित प्रमुख तन्त्री वाद्य एवं चर्म वाद्यों का वर्णन कीजिये।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

6.1

1. धार्मिक प्रयोजनों के लिए तथा लौकिक समारोह के अवसर पर।
2. मधुर कंठ वाले उत्तम गायक, उत्तम वादक व उत्कृष्ट प्रबन्धकार, वेदज्ञान तथा वैदिक क्रियाओं में परिपक्व।
3. पिता से पुत्र को, गुरू से शिष्यों को, गुरूकुल में विद्यार्थियों की सामूहिक रूप से शिक्षा तथा आश्रम, परिषद व सम्मेलन आदि माध्यम।
4. गाथा, नाराशंसी, रैभ्य।
5. वीणा गाथिन, गाथागायक, वीणागणगिन।
6. रज्जु, अरूण, प्रकृति, पुष्प तथा बसन्त नृत्य।

6.2

1. वेद मन्त्रों का स्वर व लययुक्त गान करना।
2. पूर्वार्चिक में केवल एक ऋचा का प्रयोग होता था तथा साम का एकल गान किया जाता था जबकि उत्तरार्चिक में एकाधिक गायकों के द्वारा तीन-तीन ऋचात्मक सूक्तों के ऊपर गान किया जाता था।
3. ग्रामगेयगान, अरण्यगेय गान, ऊहगान तथा ऊह्यगान।
4. प्रस्ताव, उद्गीथ, प्रतिहार, उपद्रव, निधन।
5. प्रस्तोता, उद्गाता, प्रतिहर्ता।
6. सा + अम:

6.3

1. ऊंचा, नीचा तथा मध्य का स्वर।
2. आर्चिक, गाथिक, सामिक।
3. क्रुष्ट, प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, मन्द्र, अतिस्वार्य।

टिप्पणी

6.4

1. चार प्रकार के वाद्य उपलब्ध थे-

   (1) तन्त्री वाद्य (2) फूंक से बजने वाले वाद्य (3) चर्म वाद्य (4) धातु निर्मित वाद्य।

2. सौ तारों से युक्त 'बाण' नामक वीणा।

3. भूमि-दुन्दुभि को भूमि में गढ्ढ़ा खोद कर उसके ऊपर चर्म मढ़कर बनाया जाता था।

पारिभाषिक शब्दावली

1. अथर्ववेद
2. ऋग्वेद
3. यजुर्वेद
4. सामवेद

भारतीय संस्कृति के चार वेद

5. आर्चिक संहिता – सामवेद की पहली संहिता
6. पूर्वार्चिक – सामवेद की आर्चिक संहिता का पूर्व भाग
7. उत्तरार्चिक – सामवेद की आर्चिक संहिता का उत्तर भाग
8. गान संहिता – सामवेद की दूसरी संहिता
9. ग्रामगेय गान
10. अरण्यगेयगान
11. उहगान
12. उह्यगान

– गान संहिता के चार भाग

13. प्रस्ताव
14. उद्गीथ
15. प्रतिहार
16. उपद्रव
17. निधन
18. हिंकार
19. प्रणव

– सामगान की भक्तियाँ

टिप्पणी

20.	प्रस्तोता		
21.	उद्गाता	–	सामगान की भक्तियों के गायक
22.	प्रतिहर्ता		
23.	आर्चिक	–	सामगान में एक स्वर का प्रयोग
24.	गाथिक	–	सामगान में दो स्वरों का प्रयोग
25.	सामिक	–	सामगान में तीन स्वरों का प्रयोग
26.	अनुदात्त		
27.	उदात्त	–	तीन वैदिक स्वर
28.	स्वरित		
29.	तत	–	तंत्री युक्त वाद्य
30.	सुषिर	–	वायु के प्रयोग से बजने वाले वाद्य
31.	अवनद्ध	–	चर्म द्वारा मढ़ा हुआ वाद्य
32.	घन	–	धातु वाद्य
33.	गाथा		
34.	नाराशंसी	–	वैदिककालीन लौकिक गीत के प्रकार
35.	रैभ्य		
36.	गाथागायक		
37.	वीणागाथिन	–	वीणा वाद्य के साथ गाथा का गायन करने वाले गायक
38.	वीणागणगिन		
39.	रज्जुनृत्य		
40.	अरुण नृत्य		
41.	प्रकृति नृत्य	–	वैदिक काल में प्रचलित समूह नृत्य
42.	पुष्प नृत्य		
43.	बसन्त नृत्य		